

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य के 'छायावादी' युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। जहाँ उनकी कविताओं में करुणा और रहस्यवाद की प्रधानता है, वहीं उनके निबंधों में एक अत्यंत गंभीर और तार्किक चिंतक की छवि दिखाई देती है। उनका निबंध '**साहित्यकार की आस्था**' कला, साहित्य और समाज के प्रति लेखक के उत्तरदायित्वों को समझने के लिए एक बुनियादी गाइड की तरह है।

इस निबंध के माध्यम से महादेवी जी ने यह स्पष्ट किया है कि एक रचनाकार केवल शब्दों का जादूगर नहीं होता, बल्कि वह समाज की चेतना का निर्माता भी होता है। आइए, उनके विचारों के आधार पर कलाकार के दायित्वों और वैचारिक प्रतिबद्धता का विश्लेषण करते हैं।

1. 'आस्था' का अर्थ: साहित्यकार की नींव

महादेवी जी के लिए 'आस्था' का अर्थ कोई धार्मिक कर्मकांड या अंधविश्वास नहीं है। उनके अनुसार, आस्था का अर्थ है— **जीवन के शाश्वत मूल्यों में अटूट विश्वास**। एक रचनाकार जब तक मानव जीवन की गरिमा, सत्य और न्याय में विश्वास नहीं रखेगा, तब तक उसकी रचना समाज को कुछ भी नया नहीं दे पाएगी।

वे मानती हैं कि संशय (Doubt) से विनाश होता है और आस्था से सृजन। साहित्यकार की पहली प्रतिबद्धता अपने स्वयं के विश्वासों के प्रति होनी चाहिए। यदि लेखक खुद ही भ्रमित है, तो वह समाज का मार्गदर्शन कैसे करेगा?

2. कला के प्रति दायित्व: सत्य और सौंदर्य का समन्वय

महादेवी वर्मा ने 'कला, कला के लिए' (Art for Art's Sake) जैसे पश्चिमी सिद्धांतों को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया। उनका मानना था कि कला का मुख्य दायित्व 'सत्य' को 'सुंदर' रूप में प्रस्तुत करना है।

- **सत्य की अभिव्यक्ति:** कलाकार का धर्म है कि वह जीवन के कठोर सत्य से आँखें न मूँदे। लेकिन उसे उस सत्य को केवल नग्न रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। उसे कलात्मकता का पुट देकर ऐसा बनाना चाहिए कि वह पाठक के हृदय को छुए।
- **कलात्मक ईमानदारी:** रचनाकार का अपनी कला के प्रति यह दायित्व है कि वह लोकप्रियता के सस्ते लालच में आकर अपनी गुणवत्ता से समझौता न करे। कला एक साधना है, और साधक को अपनी साधना की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए।

3. समाज के प्रति दायित्व: संवेदनशीलता और सामूहिकता

महादेवी जी के अनुसार, कोई भी साहित्यकार शून्य में पैदा नहीं होता। वह समाज की उपज है, इसलिए उसका समाज के प्रति गहरा कर्ज है।

- **पीड़ा का साधारणीकरण:** महादेवी जी ने 'दुःख' को बहुत महत्व दिया है। वे कहती हैं कि व्यक्तिगत दुःख से ऊपर उठकर जब कोई रचनाकार पूरे समाज के दुःख को अपना दुःख समझने लगता है, तभी वह महान साहित्य रचता है। समाज के शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्गों के प्रति करुणा रखना लेखक का नैतिक दायित्व है।
- **सामाजिक जड़ता को तोड़ना:** साहित्यकार का काम केवल मनोरंजन करना नहीं, बल्कि समाज की जड़ता और कुरीतियों पर प्रहार करना है। वह अपनी लेखनी से सोए हुए समाज को जगाता है।
- **मर्यादा की स्थापना:** समाज में नैतिक मूल्यों का हास न हो, इसके लिए साहित्यकार को एक सजग प्रहरी की तरह काम करना चाहिए। वह समाज को बताता है कि क्या सुंदर है और क्या कुरूप, क्या ग्राह्य है और क्या त्याज्य।

4. वैचारिक प्रतिबद्धता: मानवतावाद ही एकमात्र पथ

आजकल 'प्रतिबद्धता' (Commitment) शब्द का प्रयोग अक्सर राजनीतिक विचारधाराओं के संदर्भ में किया जाता है। लेकिन महादेवी वर्मा की दृष्टि में रचनाकार की प्रतिबद्धता किसी राजनीतिक दल या विशेष 'वाद' (Ism) के प्रति न होकर **'मानवता'** के प्रति होनी चाहिए।

- **वादों से ऊपर मनुष्यता:** महादेवी जी का मानना था कि राजनीति और विचारधाराएँ बदलती रहती हैं, लेकिन मनुष्यता के बुनियादी मूल्य नहीं बदलते। एक रचनाकार को संकीर्ण राजनीति से ऊपर उठकर सार्वभौमिक सत्य के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए।
- **साहस और निर्भीकता:** वैचारिक प्रतिबद्धता का एक अर्थ यह भी है कि लेखक सत्ता या शक्ति के सामने झुके नहीं। यदि समाज में कुछ गलत हो रहा है, तो वह अपनी बात कहने का साहस रखे। उसकी प्रतिबद्धता केवल सत्य के प्रति होनी चाहिए।

- **परिवर्तन के प्रति सकारात्मकता:** समाज निरंतर परिवर्तनशील है। एक लेखक को इन परिवर्तनों को समझना चाहिए और पुरानी पड़ चुकी विचारधाराओं को छोड़कर नई प्रगतिशील सोच के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए।
-

5. अंतर्जगत और बहिर्जगत का संतुलन

महादेवी जी के निबंध का एक बड़ा हिस्सा इस बात पर जोर देता है कि रचनाकार को अपने अंतर्मन (Inner World) और बाहरी दुनिया (Outer World) के बीच संतुलन बनाना चाहिए।

वे कहती हैं कि यदि लेखक केवल अपनी व्यक्तिगत भावनाओं में खोया रहेगा, तो वह 'आत्मपरक' हो जाएगा और समाज से कट जाएगा। दूसरी ओर, यदि वह केवल बाहरी दुनिया की समस्याओं पर लिखेगा और उसमें हृदय की गहराई नहीं होगी, तो वह रचना 'अखबारी रिपोर्ट' बनकर रह जाएगी। सच्ची वैचारिक प्रतिबद्धता वही है जहाँ लेखक अपनी निजी संवेदना को वैश्विक संवेदना (Global Sensitivity) बना दे।

6. वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता

आज के दौर में जब सूचनाओं का अंबार है और हर कोई अपनी विचारधारा दूसरों पर थोपना चाहता है, महादेवी जी का यह निबंध एक प्रकाश-स्तंभ की तरह है।

- **बाजारवाद के दौर में:** आज साहित्य भी एक 'प्रोडक्ट' बन गया है। ऐसे में महादेवी जी का यह कहना कि 'साहित्यकार की आस्था ही उसकी पूंजी है', बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।
 - **सोशल मीडिया और लेखक:** आज लेखक तुरंत प्रतिक्रिया देने के चक्कर में अपनी गहराई खो देता है। महादेवी जी 'मौन साधना' और 'गहन चिंतन' की बात करती हैं, जो आज के रचनाकारों के लिए बहुत जरूरी है।
-

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा के अनुसार, साहित्यकार कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, वह एक 'द्रष्टा' है जो भविष्य को देख सकता है। उसकी कला के प्रति आस्था उसे सौंदर्य की रक्षा करना सिखाती है, और उसकी समाज के प्रति आस्था उसे दूसरों के आँसू पोंछने की प्रेरणा देती है।

उनकी **वैचारिक प्रतिबद्धता** का मूल मंत्र है— "सबका कल्याण और सबकी उन्नति।" वे साहित्यकार को एक ऐसे सेतु के रूप में देखती हैं जो व्यक्ति को समाज से, वर्तमान को भविष्य से और मनुष्य को उसकी खोई हुई मनुष्यता से जोड़ता है। सीधी और सरल भाषा में कहें तो, महादेवी वर्मा का यह निबंध हमें बताता है कि एक अच्छा लेखक बनने से पहले एक 'बेहतर इंसान' और 'जिम्मेदार नागरिक' बनना अनिवार्य है।

यही वह 'आस्था' है जो साहित्य को अमर बनाती है और समाज को नई दिशा देती है।

अगला कदम: क्या आप चाहेंगे कि हम **विद्यानिवास मिश्र के 'हिमालय की पुकार'** निबंध के आधार पर प्रकृति और संस्कृति के संबंधों पर चर्चा करें?